एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

वैज्ञानिक तरीके से ग्लेडियोलस के फूलों की खेती करना

(*पुष्पेन्द्र सिंह चौधरी एवं के. थम्पासना)
उद्यानिकी बिभाग, क़षि महाबिद्यायलय, शेखावाटी संस्थान, सीकर
* 123swift16@gmail.com

ग्लेडियोलस का बनस्पतिक नाम ग्लेडियोलस ग्रान्डीफ्लोरा है जो इरैदास कुल का अत्यंत सुन्दर पुष्प है| यह विश्व के लोकप्रिय पुष्पों मे से एक है इसे सोर्ड लिली क नाम से भी जाना जाता है क्योकि पत्ती की संरचना तलवारनुमा होती है| इसका उत्पादन मुख्यरूप से कटे पुष्पों के लिए उगाया जाता है| यह सुन्दर पुष्प स्पाइक के लिए उगाया जाता है| ग्लेडियोलस के स्पाइक बिभिन्न आकर्षक रंगों एवं गुणबत्ता युक्त होते है|

भारत मे कुल पुष्प उत्पादन की दृष्टि से ग्लेडियोलस का तृतीय स्थान है| इसकी खेती मुख्यतय उत्तर भारत मे उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, चंडीगढ़, पश्चिम बंगाल, हरियाणा इत्यादि राज्यों मे शीतकाल मे की जाती है| दक्षिण भारत जहां जलबायु एक सामान मध्यम एवं अनुकूल होती है वहाँ वर्षभर ग्लेडियोलस की खेती की जा सकती है| इसके कटे पुष्पों का उपयोग बुक्के बनाने के काम मे लिया जाता है| स्पाइक की तुड़ाई पश्चात इसके पुष्प का जीवनकाल 10-12 दिनों तक होता है|

भूमि एवं जलबायु: ग्लेडियोलस उत्पादन के लिए सभी प्रकार की मृदा उपयुक्त होती है लेकिन दोमट मृदा उत्तम मानी जाती है| जिसकी पह मान 6-8 के बीच हो खेती क लिए सर्बोत्तम मानी जाती है| इसकी खेती के लिए 20-30 डिग्री सेल्सियस उपयुक्त रहता है

ग्लेडियोलस की उन्नत किस्में: ग्लेडियोलस की खेती के लिए किस्मों का चयन पुष्पों के रंग के आधार तथा लगाने के उद्देश्य के आधार पर किया जाता है| श्री गणेश, हंटिंगसॉन, नवीन, वाइट प्रोस्पेरिटी, अग्निरेखा, समर सनशाइन, पूसा स्वर्णिमा, अर्का गोल्ड, दर्शन, पूसा सृजन, पूसा विधुसी, अमेरिकन ब्यूटी इत्यादि मुख्य किस्में है|

खेत की तैयारी: खेत की तैयारी मुख्यतय 2-3 जुताई कल्टीवेटर की सहायता से करनी चाहिए एवं मिटटी को भुरभुरा कर लेना चाहिए| खेत मे उचित पानी की निकासी की ब्यबस्था होनी चाहिए क्योकि पानी के खेत मैं खड़े रहने से कॉर्मस गल जाते है| आखिरी जुताई के समय 200-300 क़्वींटल सडीगोबर की खाद खेत मे मिक्स कर देनी चाहिए|

ग्लेडियोलस के घनकंदों की बुआई करना: ग्लेडियोलस के घनकंदों की बुआई मुख्यतया उत्तर भारत मे सितम्बर माह के प्रथम सप्ताह से 14 अक्टूबर तक उपयुक्त समय होता है| घनकंदों की बुआई करने से पहले

घनकंदों की सप्ताबस्था में नहीं होना चाहिए इसीलिए इनकी सुप्ताबस्था को जिब्बरेलिक एसिड (100 पीपीएम) एवं बेंजाइल एडेनिन (20 पीपीएम) से उपचारित करके बुआई कर देनी चाहिए बुआई करते समय घनकंदों को 15X15 cm की पर एवं जमीन में 5-8 cm की गहराई मे बोई जाती है| बीज जनित रोगों के निदान के लिए कार्म को 0.2 प्रतिशत बाविस्टिन से उपचारित करने के पश्चात बुआई करनी चाहिए|

खाद एवं उर्बरक: ग्लेडियोलस की उचित बृद्धि एवं अच्छी पैदावार प्राप्त करने क लिए समयअनुसार खाद एवं उर्बरक का उपयोग करना चाहिए नाइट्रोजन की मात्रा कम होने पर स्पाइक मे फूलों की संख्या और स्पाइक की लम्बाई पर बिपरीत प्रभाब पड़ता है और पत्तियाँ पीली पड़ने लगती है फसल मे मुख्या रूप से 300 कि. ग्रा. नाइट्रोजन 200 कि. ग्रा.फ़ास्फ़रोस और 300 कि. ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से मृदा मे डालनी चाहिए|

सिंचाई एवं खरपतवार नियंत्रण: फसल मे सिचाई की आवश्यकता मृदा एवं जलबायु पर निर्भर करती है जब कार्म को बोया जाता है उस समय मृदा मे उचित नमी होना आवश्यक है जिससे कार्म का फूटान आसानी से हो सके फसल मे सिचाई सर्दियों के मौसम मे 10-12 दिनों के अंतराल पे और गर्मियों मे 6-8 दिनों के अंतराल पे सिचाई करना उपयुक्त रहता है

खेत की समय समय पर निराई गुड़ाई होना अतिआवश्यक है जिससे खरपतवार के नियंत्रण मे मदद मिलती है रासायनिक उपचार की मदद से भी खरपतवार का नियंत्रण किया जा सकता है इसके हेतु ग्लाइपोसैट (६ लिट्/है.) बुआई से पहले एवं ग्रामोक्सोन 6 लीटर /है और स्टाम्प 3 लीटर /है. की दर से छिड़काव करके खरपतवार का नियंत्रण प्रभाबी तरीके से किया जा सकता है

फूलों की कटाई एवं भण्डारण

ग्लेडियोलस के घनकंदों की बुआई के 2 माह - 3 माह पश्चात ही स्पाइक पर पुष्पों का उत्पादन शुरू हो जाता है जो मुख्यरूप से किस्मों के चयन पर निर्भर करता है स्पाइक की कटाई सुबह के समय करनी चाहिए और कट करने क बाद स्पाइक का पानी से भरी बाल्टी मे रख देना चाहिए स्पाइक की कटाई बाजार की मांग के अनुसार करनी चाहिए यदि स्पाइक को नजदीक के बाजार मे बेचना हो तो जब स्पाइक पे 3-4 पुष्प बिकसित हो जाये तो स्पाइक की कटाई करनी चाहिए और यदि पुष्पों को दूर भेजना हो तो स्पाइक की निचली कली के खिलते ही स्पाइक की कटाई करनी चाहिए स्पाइक को 20-30 गुच्छों मे बांधकर बॉक्सों मे भलीभांति ढंग से पैक करके बाजार मे भेजना चाहिए

ग्लेडियोलस के 1 है. खेत से 1 लाख से 1.5 लाख तक स्पाइक का उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है जब ग्लेडियोलस का पौधा पूरी तरह से सुख जाये तो जमीन से घनकंदों को निकाल कर अगले मौसम मे बुआई हेतु काम मे लिया जाता है

ग्लेडियोलस के मुख्य रोग एवं कीट

फ़ुजैरियम कार्म रॉट: यह एक फंगस जनित रोग है जो संक्रमित घनकंदो द्वारा फैलता है इस प्रकार के कार्म को बोने पर स्पाइक की बृद्धि कम तथा कार्म सडन इस रोग के मुख्य लक्षण है इस रोग को रोकने क लिए कॉर्मस को ३० मिनट तक गर्म पानी मैं रखने से एवं कवक रोधी रसायन से ये रोग दूर किया जा सकता है

स्कैब: यह रोग घनकन्दों पे छिलकों के ऊपर काले धब्बों के रूप मैं दिखाई देता है इस संक्रमण की शुरुआत पे हलके पीले धब्बों से होती है और बाद मे काले भूरे रंग के धब्बे मे परिवर्तित हो जाते है इस रोग की रोकथाम के लिए संक्रमित कंदों को अलग क्र देना चाहिए इसके अलावा जीवाणुरोधी रसायनो की सहायता से उपचारित करने पे इस रोग की रोकथाम की जा सकती है

थ्रिप्स: यह ग्लेडियोलस फसल का मुख्य कीट है जो मुख्य रूप से पत्तियों और स्पाइक को नुकसान पहुंचाता है इसके कारण पत्तियाँ भूरे रंग की हो जाती है और अधिक संक्रमण हो तो ये भण्डारण के दौरान कार्म को नुकसान पहुंचाता है इस रोग की रोकथाम के लिए डाईमेथोएट 30 इ सी 2 मि.ली. पर लीटर पानी मे घोलकर 10 दिनों के अंतराल पे छिड़काव करना चाहिए

कटवर्म: यह कीट मुख्यरूप से पौधे की प्रारम्भिक अवस्था मे भूमि की सतह से पौधों को काटकर हानि पहुंचाता है एवं संक्रमण की दर अधिक होने पे जमीन के अंदर कंदों को भी नुकसान पहुंचाता है इसकी रोकथाम के लिए मिथाइल पैराथीओन 0.05 प्रतिशत की दर से छिड़काव करने से इस रोग की रोकथाम की जा सकती है|

माइट्स: इस रोग की शुरुआत पौधे की प्रारम्भिक अवस्था मे शुरू हो जाती है यह कीट पत्तियों से रस चूसता है जिससे पत्तियाँ मुरझा जाती है और पत्ती पीली पड़ने लगती है इसकी रोकथाम क लिए मिथाइल पैराथीओन 0.05 प्रतिशत की दर से छिड़काव करने से इस रोग की रोकथाम की जा सकती है